नीतिशास्त्र एक ऐसा आदर्शवादी विज्ञान है जो मानव-आचरण का मूल्यांकन करता है। इसकी अनेक परिभाषायें दी गयी है। इसकी प्रमुख समस्याओं को ध्यान में रखते हुये इसके क्षेत्र का निरूपण किया गया है। इसे आदर्शवादी विज्ञान (Normative) की संज्ञा दी जाती है। कुछ विद्वानों ने इसे कला भी कहा है।

आज के अनैतिक, अशांत एवं बुराइयों से जर्जर समाज में नैतिक मूल्यों को जीवन में उतारने की आवश्यकता और अधिक बढ़ गयी है। जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य क्या है? और इसकी प्राप्ति कैसे संभव है? इन प्रश्नों का सही समाधान नीतिशास्त्र के अध्ययन से ही हो सकता है।

नीतिशास्त्र की परिभाषा (Definition of Ethics)

नीतिशास्त्र को अंग्रेजी में 'Ethics' कहते है। 'Ethics' ग्रीक शब्द 'Ethica' से निकला है, जिसका अर्थ है रीति, प्रचलन या आदत। इसे नीतिविज्ञान (Science of Morality) भी कहते है। 'Moral' शब्द की व्युत्पत्ति 'Mores' से हुई है जिसका अर्थ भी रीति, प्रचलन या आदत है। इस प्रकार **नीतिशास्त्र एक ऐसा शास्त्र है, जिसका संबंध मनुष्य के रीतिरिवाज एवं आदतों से है।**

Dr. Nehasain

रीति-रिवाज व आदतें व्यक्ति के अभ्यासजन्य आचरण है जो धीरे धीरे जनरीतियाँ/लोकाचार, परम्पराओं, प्रथाओं से होते हुये समाज के स्थिर अंग बन गये है।

आचरण (Conduct) के अन्तर्गत मनुष्य की केवल ऐच्छिक क्रियायें [Voluntary Actions] आती है। अहीं क्रियाओं को ऐच्छिक कहा जाता है, जिनके करने में व्यक्ति अपने संकल्प [Free will] से काम लेता है। उदा० के लिये ~~मूलप्रवृत्ति जनित क्रियायें~~ छींकना, खाँसना, साँसलेना इत्यादि ऐच्छिक नहीं है; क्योंकि इनके पीछे व्यक्ति का संकल्प या उसकी इच्छा का कोई स्थान नहीं रहता। इस प्रकार नीतिशास्त्र **मनुष्य के ऐच्छिक कर्मों (कार्यों) का अध्ययन करता है।**

व्यक्ति के सभी ऐच्छिक कार्यों को उचित या नैतिक नहीं कहा जा सकता ऐसे में नीतिशास्त्र के अध्ययन का मुख्यबिन्दु यही है कि मनुष्य के कार्यों की परीक्षा करके उन्हें नैतिक-अनैतिक, शुभ-अशुभ या उचित-अनुचित की संज्ञा दे। **विलियम लिली** [William Lili] ने ठीक ही कहा है " Ethics deals with the standards by which we judge human actions to be right or wrong." अर्थात नीतिशास्त्र उन मानकों की व्याख्या प्रस्तुत करता है जिनसे हम व्यक्ति के कर्मों के उचित अथवा अनुचित होने का निर्णय देते है। इसी का नीतिशास्त्र को उचित आचरण (Right Conduct) या आचरण के आदर्श (Ideal in Conduct) का विज्ञान भी माना जाता है।

Dr. Nehasain

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज के प्रति उसके कुछ दायित्व होते है। ये दायित्व उसकी क्रियाओं में दृष्टिगोचर होते है। सामाजिक जीवन में जीवनयापन हेतु प्रत्येक व्यक्ति के लिये

यह आवश्यक हो जाता है कि उसके चरित्र और संकल्प नैतिक मानदंडो के अनुकूल हो। सत (Right or truth) तथा 'शुभ' (good) जीवन के परम आदर्श कहे जाते है। अतः व्यक्ति के कर्म (कर्म) इन आदर्शों के अनुकूल होने चाहिये।

जैसा कि मैकेंजी ने कहा है "Ethics may be defined as the study of what is right or good in conduct." अर्थात व्यवहार में जो कुछ सत या शुभ है उसी का अध्ययन नीतिशास्त्र है।

सत (Right) और शुभ (good) को निःश्रेयस (ultimate end) भी कहते है। निःश्रेयस वह सर्वोच्च लक्ष्य है जिसके अन्य सभी लक्ष्य वस्तुतः साधन है।

Dr. Neha Jain

व्यक्ति का आचरण उसके चरित्र (character) पर आश्रित है। चरित्र के अनुकूल ही व्यक्ति का आचरण होता है। मनुष्य के संकल्प करने के अभ्यास (habit of will) को ही चरित्र की संज्ञा दी जाती है। चरित्र में अन्तर होने के कारण ही दो मनुष्य किसी समान परिस्थिति में असमान आचरण दिखाते है।

यदि नीतिशास्त्र को आचरण कला कहा जाये तो भी अनुचित नहीं होगा। जैसे: रेखाओं, बिन्दुओं अथवा रंगों का सुंदर विन्यास चित्रकला है, स्वरों की सुव्यवस्था संगीतकला है वैसे ही भावों का सुंदर अभियोजन, संतुलन, सुव्यवस्थापन या क्रियास आचरण-कला हैं। इसी कारण आत्मसंयम को नीतिशास्त्र का प्रमुख विषय बताया जाता है।

नीतिशास्त्र तथा समाजशास्त्र में घनिष्ठता है क्योंकि बिल्कुल एकांत आदमी कल्पनातीत है।" मानवआचरण का अध्ययन बिना उसके सामाजिक जीवन के अध्ययन के नहीं हो सकता। व्यक्ति समाज की इकाई है। व्यक्ति का सुख, समाज का सुख। समाज में रहने के कारण ही मनुष्य के सद्गुणों एवं दुर्गुणों का विकास होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से ही जैवकीय शिशु सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होता है। समाज से ही नैतिक धारणाओं (Moral Standards) सत एवं असत के विचार (notions of right and wrong) रीतियों तथा रिवाजों ((customs and manners) को ग्रहण करता है। व्यक्ति का आदर्श सामाजिक होना चाहिये, लोकहित के विरुद्ध नहीं। व्यक्तिगत हित; सामाजिक हित के अनुकूल ही होना चाहिये। व्यक्ति के अधिकांश चरित्र गुण समाज के अन्य व्यक्तियों के सम्पर्क में आने से ही प्रदर्शित होते हैं।

DR. Neha Jain

नीतिशास्त्र और शिक्षा में संबंध [Relation between Ethics and Education] शिक्षा के सिद्धान्त और उसका लक्ष्य निर्धारित करने के लिये नीतिशास्त्र की सहायता आवश्यक है। मानवजीवन का लक्ष्य वही है जो शिक्षा का है। इस लक्ष्य का स्पष्टीकरण नीतिशास्त्र में किया जाता है। सुंदर आचरण क्या है, इस प्रश्न का विवेचन नीतिशास्त्र में होता है। शिक्षा मनुष्य को

सुंदर आचरण का मार्ग बताती है। शिक्षा जगत से जुड़े प्रत्येक विचारशील व्यक्ति के लिये नीतिशास्त्र का ज्ञान आवश्यक है। नीतिशास्त्र के ज्ञान के आधार पर ही शिक्षक व विद्यार्थी के वास्तविक संबंध को, अनुशासन संबंधी प्रणालियों के औचित्य को तथा अन्य प्रकार के ज्ञान के सदुपयोग को भली-भाँति समझा जा सकता है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व को परिष्कृत कर सुयोग्य बनाना है, किन्तु सुयोग्य व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना नीतिशास्त्र का काम है।

Dr. Neha Jain

व्यक्ति की नैतिक प्रगति कई बातों पर निर्भर करती है -

- बुद्धि का विकास।
- विवेक द्वारा इच्छाओं व वासनाओं का दमन।
- नैतिक आदर्शों की खोज तथा अपनी त्रुटियों का ज्ञान।
- महान नैतिक चरित्रों का अध्ययन - अनुशीलन।
- अच्छा साहचर्य।

DR. Neha Jain

इच्छा, प्रबल इच्छा और संकल्प :- (Desire, wish and will)

किसी भी व्यक्ति को उसके उस परिवेश में अन्यों से अलग बनाते है जहाँ वह कार्यरत रहे। किसी अभाव (want) को दूर करने के लिये तथा उसकी पूर्ति हेतु हम किसी वस्तु की इच्छा रखते है। मनुष्य के मन में अनेक इच्छायें आती रहती है। सभी प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति उसके वश में नहीं। ऐसी स्थिति में इच्छाओं में द्वन्द (conflict) छिड़ जाता है। इस द्वन्द में जो इच्छा प्रबल होती है वही दूसरी इच्छाओं को परास्त कर चेतना के मैदान में अकेले रह जाती है। यही प्रबल इच्छा (wish) विजयी सिद्ध होती है। यही मैकेंजी का विचार है। इस प्रकार, प्रभावहीन इच्छा 'इच्छा' (desire) कहलाती है; किन्तु जब इच्छा प्रबल हो जाती है तब उसे 'अभिलाषा' (wish) कहते है। इसी अभिलाषा की पूर्ति हेतु व्यक्ति संकल्प (will) करता है और क्रियाशील हो जाता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी लिखते है " संकल्प शक्ति से

विधाता की दी हुई हर रेखा को बदला जा सकता है।"

* व्यवसायिक नीतिशास्त्र में प्रयोजन और इच्छा (Motive and Desire) ही व्यक्ति को नीतिगत व्यवहार करने हेतु बिना दबाव के कार्य करने हेतु आवश्यक है। जो किसी कार्य में प्रवृत्त करें, वही प्रयोजन (Motive) है। प्रयोजन के कारण ही हम कोई कार्य करते है। यदि इसे हम पैरेटो के सम्मिलन के विशिष्ट चालक के रुप में भी देखे तो पायेंगे की व्यक्ति की प्रेरणा अलग अलग है। वह आन्तर्क की भी बात करते हैं। 'प्रयोजन' का अर्थ द्विविध हो सकता है— एक वह, जो विशेष प्रकार की क्रिया के लिये बाध्य करता है; दूसरा वह जो उसके लिये प्रेरित करता है।

"प्रयोजन (Motive) वह चेतन मानसिक ~~प्रवृत्ति~~ है, जो मनुष्य को विशेष रीति से काम करने में संलग्न करती है।"

Dr. Nehajain

* नीतिशास्त्र व्यवहार की नैतिकता का विज्ञान है। मौलिक नैतिक प्रत्यय [Fundamental Ethical concept] के अन्तर्गत

- उचित और अनुचित (Right and wrong)
- शुभ और अशुभ (good and Evil)
- सर्वोच्च शुभ (The highest good)
- कर्तव्य और दायित्व (Duty and obligation)
- अधिकार और कर्तव्य (Rights and Duties)
- सद्गुण और कर्तव्य (Virtue and Duty)
- पुण्य और पाप [Merit and Demerit]

[Duty and obligation As a Moral concept]

कर्तव्य एवं दायित्व ; – नैतिक अवधारणा के रूप में व्यवसायिक आचार नीति के अन्तर्गत कर्तव्य एवं दायित्व एक प्रमुख ~~घटक~~ आदर्श है। कर्तव्य एक प्रकार की नैतिक जिम्मेदारी है, जिसे संभालने के लिये सभी को तैयार रहना चाहिये। नैतिक कर्तव्य का पालन नैतिक दायित्व है और अनैतिक कार्यों की अस्वीकृति भी नैतिक कर्तव्य के ही अन्तर्गत आता है। भय या दंड के त्रास से कोई कर्तव्य नहीं किया जाता। कर्तव्य में ही दायित्व का भाव निहित है। जैसे ही हमें कोई कर्तव्य का ज्ञान होता है, त्योंही उसका पालन हमारा दायित्व हो जाता है। 'यह कर्तव्य है' का विचार हमें 'इसे करना चाहिये' के निष्कर्ष पर पहुँचा देता है।

DR. Neha Jain

सद्गुण और कर्तव्य : [virtue and duties as a Moral Concept]

सद्गुण [virtue] व्यक्ति के नैतिक विकास का प्रतीक है। इसमें तीन बातें पायी जाती है।

① कर्तव्य ज्ञान

② कर्तव्य का स्वेच्छा से पालन

③ सद्गुण का अर्जन। (अभ्यासपूर्वक कार्यों के पालन के प्रति जो प्रतिबद्धता जिससे स्थायी प्रवृत्ति में श्रेष्ठता उत्पन्न हो जाती है, उसे ही सद्गुण या 'धर्म' कहते है। Virtue is ~~the~~ crown of an honest life. [ईमानदार जीवन के लिये सद्गुण एक ताज है।

सुकरात के अनुसार "ज्ञान ही सद्गुण अथवा धर्म है।" (Knowledge is virtue) यहाँ ज्ञान का अर्थ कर्त्तव्यों के प्रति ज्ञान से है और उन्हें धारण करना ही 'धर्म' है।

अधिकार और कर्त्तव्य : नैतिक प्रत्ययों के रूप में [Right and Duty As Ethical Concepts] कर्तव्य और अधिकार सापेक्ष है। "पहले अपने को योग्य बनाओ, तब इच्छा करो" [First Deserve then desire] समाज में सह-अस्तित्व, समायोजन और सात्मीकरण के लिये, कार्यस्थल पर भी कर्त्तव्य और अधिकारों का सामंजस्य महत्वपूर्ण है।

* नैतिकता की आवश्यक मान्यतायें क्या है?

[Postulates of Moral Judgement] DR. Netnain

नैतिकता तो एक आचार संहिता है जो मनुष्य को अपने ज्ञान से कर्तव्यों का निर्वहन करके सामाजिक मूल्यों के प्रति आकृष्ट और सहज स्वीकृति है।

'नीति' शब्द में 'इक' प्रत्यय लगने से नैतिक शब्द बना है। 'नीति' शब्द का अभिप्राय - ले जाने की क्रिया, पथप्रदर्शन, आचार, शील उपाय, लोकपद्धति या समाज के लिये निर्दिष्ट किया हुआ आचार-व्यवहार। अंग्रेजी में नीति शब्द का अनुवाद 'Moral' है। अंग्रेजी शब्द Moral लैटिन भाषा के शब्द 'Mores' से लिया गया है जिसका अभिप्राय है

रीतिरिवाज, आदतें .....

* नैतिकता की आवश्यक मान्यताओं के दो रूप हैं –
① प्राथमिक आवश्यक मान्यतायें।
② गौण आवश्यक मान्यतायें।

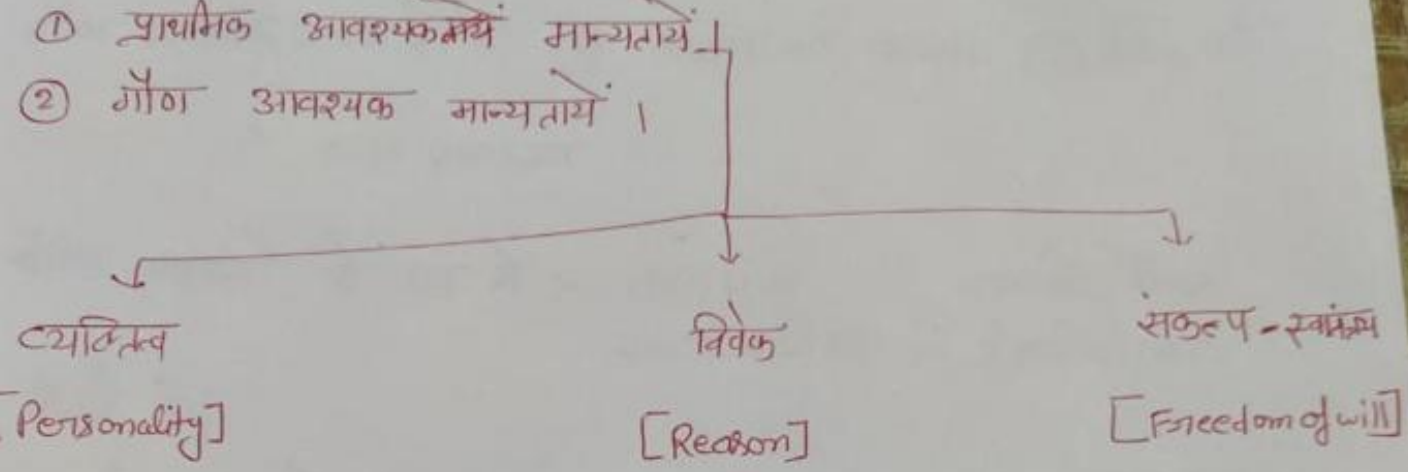

व्यक्तित्व [Personality] | विवेक [Reason] | संकल्प-स्वातंत्र्य [Freedom of will]

व्यक्तित्व :- "नैतिकता का केन्द्रबिन्दु व्यक्तित्व है।" [The central fact of Morality is called Personality] यदि आचरण करने वाला कोई व्यक्तित्व न हो, तो फिर नैतिक निर्णय अर्थहीन हो जाता है। पेड़ पौधों की क्रियाओं में चेतना का अभाव है। पशुओं की क्रियाओं में चेतना रहती है पर शुभ-अशुभ, नैतिक-अनैतिक का भाव नहीं रहता इस दृष्टि से मानव ही चेतन एवं विवेकपूर्ण व्यवहार कर सफलता के शिखर पर अपने व्यक्तित्व को विराट बनाकर स्थापित करने की सामर्थ्य रखता है

DR. Narayan

विवेक :- मनुष्य में दो गुण सामान्य रूप से पाये जाते हैं – पशुत्व और विवेक [animality and Rationality]
नैतिक निर्णयों हेतु विवेक (तार्किक ज्ञान) अनिवार्य नैतिक मान्यता है

अर्थात 'स्व' से नियन्त्रित भी रहता है। यह नियन्त्रण कोई बाह्य नियन्त्रण नहीं बल्कि 'आत्मनियन्त्रण' है।

गौण आवश्यक मान्यतायें :- ① आत्मा की अमरता ② ईश्वर में विश्वास ③ इच्छा स्वातन्त्र्य

नैतिक मानदंडो के रूप में :- बाह्य नियम, राजनीतिक नियम, सामाजिक नियम, ईश्वरीय नियम मिलते है।

सामाजिक नियमो के रूप में मानदण्डों और मूल्यो के अनुसार किये जाने वाले कार्य ही उचित और समाजसापेक्ष माने जाते है। जिन कार्यो को समाज अनुचित मानता है उनके लिये दंड-भय का सहारा लेता है।

डेविस समाज में अनुशास्ति के रूप में सकारात्मक एवं नकारात्मक अनुशास्ति की चर्चा करते है।

• नैतिकता एक सामाजिक संस्था है, जिसका संरक्षण समाज की शक्ति व दबाव द्वारा होता है।

डॉ स्टीफन कहते है "कुछ भी स्वतः उचित या अनुचित नहीं है, किन्तु सामाजिक नियम तथा परिवेश द्वारा ही ऐसा प्रतीत होता है।"

Dr. Mehra

"विवेक हीनः पशुभि समानाः" वेबर की बुद्धिसंगतता, निर्वचनात्मक समाज अर्थात तार्किक क्रियायें ही सामाजिक क्रियायें है।

संकल्प - स्वातंत्र्य → "नैतिकता बाहर से दबाव नहीं, बल्कि भीतर से खिंचाव है।" (Morality is not a push from without but a pull from within)

यदि व्यक्ति बाह्य परिस्थितियों एवं दबाव के कारण कोई कार्य करता है, तो फिर उसके कार्य और मशीन के कार्य में कोई अंतर नहीं रह जायेगा। दबाव में आकर कार्य करने से उत्तरदायित्व का भाव समाप्त हो जाता है। मनुष्य में इच्छा संघर्ष होता है और वह अपनी स्वतन्त्र इच्छा से किसी एक को चुन लेता है और उसी की पूर्ति हेतु प्रयत्नशील रहता है। DR. Neha Jain

नीतिशास्त्र का प्रमुख संबंध 'चाहिये' और 'नहीं चाहिये' से ही है। इच्छा-स्वातन्त्र्य रहने पर ही किसी कार्य के लिये पश्चाताप होता है। 'पश्चाताप' में ही यह तथ्य निहित है कि अमुक काम को हमने जानबूझकर अपनी स्वतन्त्र इच्छा से किया था। इच्छा-स्वातन्त्र्य का अर्थ यह नहीं है कि समाज में व्यक्ति मनमाने तरीके से कार्य करें। उसके अन्दर जो इच्छा संघर्ष उत्पन्न होता है उसमें से किसी एक को चुनना पड़ता है। इस चुनाव में व्यक्ति अपने

आत्म संतुष्टि, आत्म विजय, आत्मसिद्धि

[Self gratification, Self conquest and Self-realisation]

के लिये नैतिक चरणों के लिये आत्मसिद्धि ही [illegible] है [illegible] मनुष्य ([illegible]) प्रवृत्ति ([illegible]) के बीच का [illegible] [illegible] आत्मकेन्द्रित मनुष्य और प्रवृत्ति की [illegible] को दूर कर मनुष्य के 'मन' पर [illegible] केन्द्रित करना है।

[illegible]